अध्याय-पंचम
शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय - पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव :

इस अध्याय में लघु शोध का सारांश एवं अध्याय चार में दिए गए प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष, सुझाव इत्यादि का संक्षिप्त वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

शोध सारांश :

5.1 परिचय :

शिक्षा का मुख्य उद्धेश्य बालक व बालिकाओं का सर्वांगीण विकास करना है। अत: इस उद्धेश्य की प्राप्ति के लिए सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु बालिकाओं का शिक्षित होना आवश्यक है। बालिकाओं का शाला में प्रवेश, नामांकन, सार्वभौमिक प्रतिभागिता एवं न्यूनतम अधिगम स्तर तक सार्वभौमिक उपलब्धि के लक्ष्य को प्राप्त करना अत्यधिक आवश्यक है। क्योंकि देश के सामाजिक, आर्थिक विकास के अन्य पक्षों पर लड़कियों की शिक्षा का महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। लेकिन अगर हम स्त्री शिक्षा के इतिहास पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि बालिकाएँ शुरू से ही शिक्षा में पिछड़ी हुई है। इसीलिए स्त्रियों को अलाभित वर्ग में रखा गया है और विभिन्न आयोगों ने स्त्री शिक्षा के विस्तार के लिए विभिन्न सुझाव दिए। इन सुझावों व प्रयासों के द्धारा स्त्री शिक्षा में विस्तार तो हुआ है। लेकिन यह अभी भी अपेक्षित नहीं है जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में स्त्री शिक्षा की भागीदारी 59 प्रतिशत के लगभग है जो सार्वभौमिक शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में बहुत ही कम है। बालिका शिक्षा के पिछड़ेपन के बहुत से कारण है। इनमें से एक कारण बालिकाओं के परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति भी है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और उसकी अधिक जनसंख्या गावों में निवास करती है इसलिए जब तक ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा में भागीदारी का प्रतिशत अधिक न होगा तब तक शिक्षा में सार्वभौमिक लक्ष्य प्राप्त करना कल्पना मात्र है। ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित करती है।

सामाजिक -आर्थिक स्थिति के अतिरिक्त भी कई मनोवैज्ञानिक कारक भी बालिकाओं की उपलब्धि को प्रभावित करते है इनमें से एक कारक उपलब्धि अभिप्रेरणा है जिस बालक या बालिका की उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर उच्च होता है तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि की सामान्यत: उच्च होती है ऐसा कई प्रयोगों से सिद्ध हो चुका है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर इसी लघुशोध को संपन्न करने की आवश्यकता हुई। जिसमें ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं के सामाजिक- आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

5.2 समस्या कथन :

"ग्रामीण एवम नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन"

5.3 शोध उद्देश्य :

1. ग्रामीण एवम नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. ग्रामीण एवम नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं का सामाजिक आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. ग्रामीण क्षेत्र की उच्च स्तर की बालिकाओं के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
6. नगरीय क्षेत्र की उच्च स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
7. ग्रामीण क्षेत्र की उच्च स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
8. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5.4 शोध चर :

चर किसी घटना, क्रिया या प्रक्रिया का वह पक्ष या स्वरूप है जो अपनी उपस्थिति से किसी दूसरी घटना या प्रक्रिया को, जिसका अध्ययन किया जा रहा है प्रभावित करता है।

एडवर्डस :

" चर वह प्रत्येक वस्तु है जिसका हम निरीक्षण कर सकते है और वह इस प्रकार की हो जिसकी इकाई को निरीक्षण के विभिन्न वर्गो में कही वर्णन किया जा सके।"

शोध मुख्यत: दो प्रकार के चरो पर केन्द्रित रहता है। 1. स्वतंत्र चर 2. आश्रित चर

1. **स्वतंत्र चर :**

टाउनसैण्ड के अनुसार " स्वतंत्र चर वह राशि है जिसे प्रयोगकर्ता किसी निरीक्षित घटना से सम्बधित करने के लिए घटाता बढ़ाता है।"

2. **आश्रित चर :**

टाउनसैण्ड के अनुसार "आश्रित चर वह चल राशि है जो प्रयोगकर्ता द्वारा स्वतंत्र चर के प्रदर्शन पर प्रदर्शित हो, हटाने पर अदृश्य हो तथा मात्रा के परिवर्तित होने पर परिवर्तित हो जाए।"

अध्ययन में प्रयुक्त चर :

स्वतंत्र चर : 1. उपलब्धि - अभिप्रेरणा
2. सामाजिक - आर्थिक स्तर

आश्रित चर : 1. शैक्षिक उपलब्धि

उपचर :

लिंग - बालिकाएँ

क्षेत्र - ग्रामीण एवम नगरीय

5.5 शोध परिकल्पनाएँ :

1. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

2. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नही है।

3. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक आर्थिक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक आर्थिक स्तर का कोई प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि में नही पड़ता है।

5. ग्रामीण क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।

6. नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।

7. ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।

8. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5.6 <u>शोध कार्य का सीमाकंन</u> :

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल विदिशा जिले के शहरी एवम ग्रामीण क्षेत्र तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन केवल उच्च प्राथमिक स्तर तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में केवल शासकीय विद्यालय को ही चुना गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा व सामाजिक आर्थिक स्तर का ज्ञात करने तक सीमित है।
5. प्रस्तुत अध्ययन में केवल 120 उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं तक सीमित है जिनमे 60 नगरीय क्षेत्र व 60 ग्रामीण क्षेत्र से चुनी गयी है।

5.7 <u>न्यादर्श चयन</u> :

राय –(1991) : "न्यादर्श पद्धति अनुसंधान की वह पद्धति है जिसमें अनुसंधान विषय के अन्तर्गत सम्पूर्ण जनसंख्या से सावधानीपूर्वक कुछ इकाइयों को चुना जाता है जो सम्पूर्ण जनसंख्या की आधारभूत विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं"।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा विदिशा जिले के नगरीय क्षेत्र के व ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा विदिशा जिले के नगरीय क्षेत्र व ग्रामीण क्षेत्र में उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

चयनित विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर की कुल बालिकाओं की संख्या 120 है जिसमें 60 बालिकाओं को ग्रामीण क्षेत्र व 60 बालिकाओं को नगरीय क्षेत्र से लिया गया है।ग्रामीण क्षेत्र में कक्षा छठवी, सातवीं व आठवीं की प्रत्येक कक्षा से 20 बालिकाओं को लिया गया है। नगरीय क्षेत्र में भी कक्षा छठवीं, सातवीं व आठवीं की प्रत्येक कक्षा से 20 बालिकाओं को लिया गया है।

तालिका क्रमांक -5.1

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं को दर्शाने वाली तालिका

कक्षा	ग्रामीण क्षेत्र	नगरीयक्षेत्र	योग
छठवीं	20	20	40
सातवीं	20	20	40
आठवीं	20	20	40
योग	60	60	120

5.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण :

अनुसंधान में नवीन तथ्य संकलित करने हेतु अथवा नवीन क्षेत्र का का उपयोग करने हेतु कतिपय परीक्षणों की आवश्यकता होती है। इन्ही यंत्रों को उपकरण कहते है।

उपरोक्त बिन्दुओं का ध्यान रखते हुए अनुसंधान कर्ता द्वारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1. शैक्षणिक उपलब्धि :

शैक्षिक उपलब्धि के लिए उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं का कक्षा छठवीं के लिए कक्षा पाँचवी, कक्षा सातवीं के लिए कक्षा छठवी व कक्षा आठवीं के लिए कक्षा सातवी के वार्षिक परीक्षाफल को लिया गया है।

2. <u>उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण</u> :

ग्रामीण व नगरीय विद्यालय की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा के लिए डॉ. ंटी. आर. शर्मा ंका उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण का प्रयोग किया गया जो 11 से 15 वर्ष तक के बच्चों के लिए है। इसमें कुल 38 प्रश्न है।

प्रत्येक प्रश्न के ढो विकल्प हैं जिसमें एक सही व एक गलत है। सही के लिए 1 अंक व गलत के लिए 0 अंक निर्धारित किया गया है परीक्षण के अंकों के निर्धारण के आधार पर उपलब्धि अभिप्रेरणा क तीन वर्ण बनते है। (1) उच्च अभिप्रेरित (2) मध्यम अभिप्रेरित (3)निम्न अभिप्रेरित। इन्हीं तीनों के आधार पर तालिकाओं उपलब्धि अभिप्रेरणा का पता लगाया गया है।

3. <u>सामाजिक आर्थिक परिसूची</u> :

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक आर्थिक स्तर का अध्ययन करने के लिए डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ की सामाजिक आर्थिक स्तर परिसूची,(ग्रामीण व नगरीय) का प्रयोग किया गया है। इस परिसूची में 20 प्रश्न सम्मिलित किए गए है प्रत्येक प्रश्न के अंकों के निर्धारण के लिए तीन या चार विकल्प ढिए गए हैं व इन विकल्पों के अंकां का निर्धारण अलग-अलग प्रश्नों की गुणवत्ता के आधार पर किया गया है। नगरीय परिसूची का विश्वसनीयता गुणांक 87 है व ग्रामीण परिसूची का का विश्वसनीयता गुणांक .85 है। परिसूची के अधिकतम प्राप्तांक 250 है।

5.9 <u>प्रयुक्त सांख्यकीय विधि</u> :

संग्रहीत प्रढत्तों को संगठित तथा वर्गीकृत करने के पश्चात आँकड़ो के विश्लेषण एंव व्याख्या हेतु सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। नगरीय एंव ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरणा व सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य तुलनात्मक अध्ययन हेतु टी - टेस्ट प्रयुक्त किया गया।

ग्रामीण एंव नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव व शैक्षिक उपलब्धि पर उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकीय को प्रयुक्त किया गया।

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव के मध्य अंतर का अध्ययन करने के लिए प्रतिगमन समीकरण का उपयोग किया गया है ।

5.10 **शोध निष्कर्ष :**

प्रस्तुत शोध कार्य से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :

1. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया। अत: ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाई गई।

2. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अंतर पाया गया। अत: ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा अधिक पाई गई।

3. ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर में अंतर पाया गया। अत: ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं का सामाजिक - आर्थिक स्तर उच्च पाया गया।

4. नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं का सामाजिक - आर्थिक स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता है।

5. ग्रामीण क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं का सामाजिक-आर्थिक स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता है।

6. नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि को उपलब्धि अभिप्रेरणा प्रभावित नहीं करती है।

7. ग्रामीण क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि को उपलब्धि अभिप्रेरणा प्रभावित नहीं करती है।

8. जब हम ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च स्तर की बालिकाओं के सामाजिक आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव देखते हैं तो हम पाते है कि जब सामाजिक आर्थिक स्तर नियंत्रित हो जाता है तब उपलब्धि अभिप्रेरणा बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

5.11 सुझाव :

1. ग्रामीण क्षेत्र की शासकीय कन्या विद्यालयों में उचित शिक्षा व्यवस्था करना चाहिए ।

2. सरकार को बालिकाओं को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना चाहिए ताकि वे आसानी से शिक्षा प्राप्त कर सकें ।

3. बालिकाओं की शिक्षा के प्रति परिवार के सभी सदस्यों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना आवश्यक है।

4. बालिकाओं को शिक्षा के प्रति परिवार के सभी सदस्यों द्वारा बालिकाओं को अभिप्रेरित करना आवश्यक है।

5. बालिकाओं को शिक्षा के प्रति विद्यालय में शिक्षक को, घर में अभिभावकों को अभिप्रेरित करते रहना चाहिए ।

6. बालिकाओं को परिवार, समाज व विद्यालय से सकारात्मक पुनर्बलन मिलना चाहिए। जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च हो सके ।

7. बालक/बालिकाओं के अच्छे कार्य के लिए प्रशंसा व प्रोत्साहन देकर बच्चों को अभिप्रेरित करना चाहिए। जिससे उनमें उचित दृष्टि कोण का विकास हो सके ।

5.12 भविष्य अध्ययन हेतु सुझाव :

बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा, सामाजिक-आर्थिक स्तर व शैक्षिक उपलब्धि को बढावा देने के लिए इस विषय पर आधारित शोध कार्य निरंतर किये जाने चाहिए, जिनके कुछ निम्न विषय हो सकते हैं।

1. न्यादर्श का आकार बढा करके भविष्य में इस विषय पर शोध कार्य किया जा सकता है।

2. शासकीय व अशासकीय विद्यालय में इस विषय पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

3. भविष्य में इस विषय पर अनुदैर्ध्य अध्ययन भी किया जा सकता है।

4. भविष्य में इस विषय पर बालक व बालिकाओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5. भविष्य में इस विषय पर सामान्य वर्ग, पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के बालक/ बालिकाओं में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

6. बालक/बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि को उपलब्धि अभिप्रेरणा किस प्रकार प्रभावित करती है, इस विषय पर भी अध्ययन किया जा सकता है।

❁❁❁

समाप्त